Volume: 4 Issue: 1 Pages: 40-42

रवीन्द्र कालिया के उपन्यासों में नारी चेतना का विश्लेषणात्मक अध्ययन

[*1] डॉ. प्रभु दयाल शर्मा

[*1] सहायक आचार्य, राजकीय कन्या महाविद्यालय, सांडवा चूरू, राजस्थान, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 13/Dec/2024
Accepted: 16/Jan/2025

***Corresponding Author**
डॉ. प्रभु दयाल शर्मा
सहायक आचार्य, राजकीय कन्या महाविद्यालय, सांडवा चूरू, राजस्थान, भारत।

सारांश:
रवीन्द्र कालिया के उपन्यास आधुनिक भावबोध को उजागर करते हुए नारी चेतना पर विशेष केंद्रित रहे हैं। इनके उपन्यास नारी चेतना के प्रति सजगता के भाव पैदा करते हैं। समाज के प्रति समर्पित भाव से कार्य करते हुए कालिया जी ने स्त्री चेतना के हर पहलू को उजागर किया है। रवीन्द्र कालिया नारी जीवन की प्रेरणा हैं। उनके उपन्यासों में नारी चेतना में बहुचर्चित कथाकार रवीन्द्र कालिया का लेखन विशेष रूप से भारतीय स्त्री के परिवेश के चतुर्दिक घूमता है। रवीन्द्र कालिया स्त्री की समस्याओं को अपने कथा साहित्य में वास्तविक धरातल पर साहस के साथ प्रस्तुत करती है महिला कथाकारों में रवीन्द्र कालिया अपनी अलग और मजबूत पहचान बनाने वाली कथा साहित्य का मूलतः विषय स्त्री चेतना ही रहा है। रवीन्द्र कालिया के उपन्यासों में आधुनिकता के नाम पर गिरते मानवीय मूल्यों को बचाने के लिए नारी चेतना को जरूरी बताया गया है। नारी की सजगता ही समाज के अस्तित्व को बचाए रखती है। नारी की भावुकता, सहृदयता व शालीनता उसकी कमजोरी न मानकर मानव मन की विशेषता के रूप में चित्रित किया है। नारी जीवन के यथार्थ पक्ष को निष्पक्षता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द: सात्विक, अस्मिता, जीवनयापन, त्रासदी, आबरू।

प्रस्तावना:

त्यागियों की जन्मदाता नारी ही है, दानियों की जन्मदाता नारी ही है, सेवा समर्पण की ये प्रतिमूर्तियां ज्ञानियों की जन्मदाता नारी ही है। भारतीय समाज में नारी की स्थिति समय, काल और परिस्थिति के अनुसार सदैव बदलती रही है। समय के साथ उसकी स्थितियों में परिवर्तन आया है। वैदिक काल में नारी की स्थिति बहुत मजबूत तथा प्रतिष्ठापूर्ण थी लेकिन धीरे-धीरे उसकी स्थितियों में बदलाव होने लगा। वक्त की आंधी ने महिला की स्थिति को कमजोर व बेबसीपूर्ण स्थिति में पहुँचा दिया। वैदिक काल में पुरुषों की सभा में शास्त्रार्थ करने वाली महिला बाद के कालखण्ड में घर की चारदीवारी के बीच कैद और पुरुष के पैर की जूती तक बना दी गई। हालाँकि आधुनिक समाज में महिलाओं की स्थिति में काफी परिवर्तन आया है। भारतीय राजनीति में भी महिलाओं ने आयामों को प्राप्त किया है।

वैदिक काल में नारी को सभी अधिकार प्राप्त थे। वह युद्ध क्षेत्र में पुरूषों की भांति उटकर खड़ी रहती थी। वह शास्त्रार्थ कर सकती थी और उसे अपना वर स्वयं चुनने का भी पूर्ण अधिकार प्राप्त था, लेकिन मध्यकाल तक आते-आते नारी की स्वतंत्रता पर अंकुश लग गया और बाल विवाह और सती प्रथा जैसी समाज को कलंकित और शर्मसार करने वाली कुप्रथाओं का प्रचलन बढ़ा। नारी चेतना से आश्यः चेतना शब्द जाग्रति का पर्याय है। अतः स्त्री अपने अधिकारों के प्रति समाज में अपना स्थान निर्धारित करने एवं दमनकारी नीतियों के विरुद्ध आत्म-सम्मान पूर्वक खड़े रहना ही नारी चेतना की अवधारणा है। जब एक पितृ-सतात्मक समाज में स्त्री अपने मौलिक अधिकारों को निष्पक्ष रूप से प्राप्त करने के लिए जाग्रत हो जाती है तो वह चेतना अन्य नारियों के लिए प्रेरणापुंज का कार्य करती है। हिंदी साहित्य के विकास मार्ग को सुदृढ करने के लिए गद्य विधाओं की अहम भूमिका है। गद्यात्मक विकास की इस कड़ी में अंग्रेजी एवं बंगाली उपन्यास पथ प्रदर्शक के रूप में हमारे सामने आए। मानव समाज का एक विशिष्ट अंग होता है। प्रत्येक मनुष्य समाज में इस विशिष्टता को बनाए रखते हुए अपना जीवन यापन करता है। यह विशिष्टता उस सामाजिक व्यक्ति की व्यक्तिगत पहचान होती है उनकी यह पहचान समाज के अनुरूप ही होती है यह व्यक्तिगत पहचान समाज को हर परिस्थिति से प्रभावित करती है। एक अराजक व्यक्ति का जीवन समाज में भय, त्रासदी फैलाता है वही एक सभ्य एवं सरल स्वभाव के संत मानव समाज में एकता एवं अखंडता की चेतना जाग्रत करते हैं। विविध लोगों के मध्य रहते हुए उनकी हर प्रकार की मूलभूत आवश्यकताओं एवं मूल कर्तव्यों के प्रति सजगता पैदा करना ही सामाजिक चेतना है चेतना सामाजिक वातावरण के संपर्क से विकसित होती है। डॉक्टर रत्नाकर पांडे के अनुसार "सामाजिक चेतना भावात्मक या नकारात्मक नहीं होती व्यक्ति मात्रा

में चौतन्य मूर्त है परंतु रूढ़ि, अशिक्षा और अभाव के कारण यह दुष्प्रभावित या कुंठित हो जाती है इस दुष्प्रभाव से मुक्त रहना और कुंठा को अपनी अंतरवृति से तिरोहित बनाए रखना ही सामाजिक चेतना है।

उपन्यासों में नारी चेतनाः हमारे धार्मिक ग्रंथो में यह बताया जाता है कि मनुष्य जन्म कई योनियों में जन्म के बाद मिलता है। इनमें से कुछ मनुष्य अपने जन्म की सार्थकता सिद्ध कर पाते हैं जन्म की सार्थकता से हम यह मान सकते हैं कि समाज में कई ऐसे लोग हैं जो केवल अपने स्वार्थ को त्याग कर अपना संपूर्ण जीवन समाज सेवा में समर्पित कर देते हैं। ऐसे लोगों में कवि, लेखकों का स्थान भी महत्वपूर्ण है। ऐसे ही साठोतरी युग के प्रमुख लेखक रवींद्र कालिया का नाम भी निस्वार्थ भाव से समाज में चेतना जाग्रत करने वालों में प्रमुख है सामाजिक समरसता के भाव से काम करने वाले रवींद्र ने सदैव ही समाज को नारी चेतना के प्रति जाग्रत किया है। कालिया का उपन्यास "17 रानडे रोड' नारी चेतना का सशक्त उदाहरण है। उपन्यास में प्रेस वार्ता में जब पत्रकार महोदय द्वारा किसी अभिनेत्री को यह पूछा गया कि आप अपनी सुरक्षा कैसे करती हैं तो अभिनेत्री द्वारा बड़े ही सहजता पूर्वक जवाब देना कि "वह लाल मिर्च पाउडर और नाइफ से अपनी सुरक्षा करती है अभिनेत्री द्वारा दिए गए जवाब से यह स्पष्ट है कि आधुनिक नारी स्वयं को कमजोर अथवा अबला का पर्याय न मानकर जज्बे के साथ लड़ने में विश्वास करती है। वह अपनी अस्मिता के लिए किसी पर आश्रित न होकर स्वयं ही बचाव करना जानती है एक नारी इस दकियानूसी समाज में भी अपने अधिकारों के लिए अनवरत संघर्ष करती है।

कालिया के उपन्यास में तत्कालीन समाज में फैली वेश्यावृति का भी पूर्णतया विरोध किया गया है। इस प्रवृति में लिप्त स्त्रियों को समाज की मुख्य धारा में जोड़ने का सार्थक प्रयास किया है। वेश्यावृति से प्रभावित महिलाओं को लतीफ, प्रोफेसर शर्मा जैसे किरदारों द्वारा न्याय दिलवाने का भी प्रयास किया जाता है। स्त्री चेतना का सबसे बड़ा उदाहरण लतीफ द्वारा हसीना से शादी करने का है जिसे रूढ़िवादी समाज हेय दृष्टि से देखता है। "खुदा सही सलामत है" उपन्यास के माध्यम से मास्टर जी पात्र द्वारा स्त्री चेतना के प्रति आवाज उठाई गई है । वे विभिन्न प्रकार के धार्मिक ग्रंथो के आधार पर शिवलाल को नारी सम्मान के प्रति जाग्रत कर रहे हैं। इस संबंध में मास्टर जी का कथन है कि "हमारे शास्त्रों में लिखा है कि औरत जात पर हाथ नहीं उठाना चाहिए नारी तो कभी अबला न थी वह तो सिर्फ अपनी मर्यादा का ध्यान रखते हुए विनम्र हो जाती है। आधुनिक ग्रामीण समाज में आज भी स्त्री की स्थिति सोचनीय बनी हुई है। स्त्री को वास्तविक मूलभूत अधिकारों से वंचित किया जा रहा है। उन्हें सामाजिक बंधनों का हवाला देते हुए समाज के गलत कानून मानने के लिए बाध्य किया जा रहा है यद्यपि आधुनिक युग के अनुसार नारी की शिक्षा के प्रति जाग्रति बढी है फिर भी नारी सुरक्षा अब भी हमारे लिए अहम विषय है समाज में भोगवृति से लिप्त लोग नारी की आबरू को तार-तार करने की कुत्सित चाल चलते रहते हैं । " खुदा सही सलामत है" उपन्यास में इसी मुद्दे को उठाते हुए कालिया जी ने हसीना नामक पात्र का सहारा लिया है हसीना जैसी खुले विचारों की लड़की जो एक हिंदू लड़के से सात्विक प्रेम करते हुए अपने जीवन का फैसला ले लेती है। वे अपने इस फैसले से पूर्णतया संतुष्ट भी है परंतु समाज के नियमों का खुला डिडोरा पीटने वाले कुछ लोगों के लिए यह बात असहनीय थी। इसी कारण एक दिन उसके पति की हत्या कर दी जाती है। अब हसीना जैसी सभी लड़की के लिए इस दकियानूसी समाज में रहना मुश्किल हो रहा था।

कालिया जी इन पात्रों को हमारे सामने प्रस्तुत कर आधुनिक समाज की मूल्यहीनता वह संवेदनाशून्यता पर आक्षेप कर रहे हैं। हम जिस समाज को सभ्यता के मूल्यांकन में रखने का दम्भ भर रहे हैं वह समाज इतना भ्रष्ट हो जाएगा यह अकल्पनीय है। हमारे मानव मूल्य का इतना हनन हो चुका है कि हम समाज में फैले दुराचारों को भी अन्यथा में ले रहे हैं। एक रचनाकार समाज के बदलाव में अपनी अग्रणी भूमिका निभाता है। सामाजिक धरातल पर घटित घटनाओं का वह स्वयं प्रत्यक्ष अंकन करता है वह सामाजिक बदलाव की हर 1 बारीकियां को समझते हुए समाज के लिए कुछ विशेष करने का प्रयास करता है। एक लेखक अपनी कर्मनिष्ठा के साथ हर परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सामाजिक चेतना के लिए प्रयास करता है। रवींद्र कालिया ने भी समाज के उत्थान में नारी के विशेष महत्व को चित्रित किया है। नारी परिवार की जड़ों को मजबूत करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उपन्यास "एबीसीडी' भी नारी चेतना से संबंधित महत्वपूर्ण पक्षों को उजागर करता है। विवाह जैसे पवित्र बंधन के प्रति आज की युवा शक्ति में विशेष चेतना जाग्रत की है। एक लड़की अपने जीवनसाथी के चुनाव के समय सदैव आशंकित रहती है लड़की को अपने हमसफर के बारे में हर प्रकार से समझने का मौका अवश्य मिलना चाहिए परंतु इसके साथ-साथ माता-पिता के निर्णय का भी सम्मान की बात कही गई है। पाश्चात्य प्रवृत्ति में अंधे होकर लिया गया निर्णय कभी दांपत्य जीवन में खुशहाली नहीं ला सकता। उपन्यास की पात्र शील पश्चात्यवादी सोच से ग्रस्त होकर निक से शादी कर लेती है। निक द्वारा की गई शादी केवल बाह्य सौंदर्य पर आधारित थी परिणाम स्वरूप तलाक की नौबत आ जाती है। कालिया जी इस उपन्यास में माता-पिता के अनुभव को भी विशेष महत्व देने की बात कह रहे हैं। मां-बाप अपनी संतान के प्रति सदैव ही मंगल कामना करते हैं। इस आधार पर कोई भी अभिभावक अपने बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ नहीं करता है। हर माता-पिता की एक ही इच्छा होती है कि उसकी बेटी हर प्रकार से सुखी रहे परंतु कुछ पाश्चात्य वादी दृष्टिकोण रखने वाले लोगों के द्वारा एक सभ्य समाज को कलंकित करने का दुस्साहस किया जाता है।

"खुदा सही सलामत है" उपन्यास नारी चेतना का सशक्त उदाहरण है नारी के प्रति तत्कालीन समाज की सोच हमारे लिए सोचनीय विषय है एक स्त्री पूरे परिवार की धूरी होती है वह अपने जीवन की संपूर्ण खुशियां त्याग कर पूरे परिवार पर समर्पित हो जाती है उस त्याग की प्रतिमूर्ति के साथ हमारे सभ्य समाज का यह कैसा न्याय ? उपन्यास में नारी की मार्मिकता के प्रति समाज में विशिष्ट चेतना जाग्रत की है। उपन्यास का प्रमुख पात्र शिवलाल लगभग आधी उम्र पार कर चुका है। उसने अभी तक तीन विवाह किए हैं। इसमें से पहली दो बीवियां उसके उत्पीड़न व सूचना से तंग आकर आत्महत्या कर लेती हैं। अब तीसरी पत्नी गुलाब देई पर भी वह अत्याचार शुरू कर देता है। गुलाब देई शांत स्वभाव व सुंदरता की प्रतिमूर्ति है । उसका पति हर बात को शंकित व संकीर्णता भरी नजरों से देखता है। वह कई बार गुलाब देई पर हाथ उठाते हुए कहता है "यह औरत आदमी का सुख चौन छीन लेती है हरामजादी ने यह नुमाइश पता नहीं किसके लिए लगा रखी है. शिवलाल के उपर्युक्त अमर्यादित शब्द इस बात को प्रमाणित करते हैं कि तत्कालीन समाज में नारी शोषण किस प्रकार होता था। नारी तो कभी अबला न थी वह तो सिर्फ अपनी मर्यादा का ध्यान रखते हुए विनम्र हो जाती है। आधुनिक ग्रामीण समाज में आज भी स्त्री की स्थिति सोचनीय बनी हुई है।

उपसंहार

विश्व में शिक्षा का महत्व बढ़ने तथा अपनी पहचान बनाने की जिजीविषा ने आधुनिक नारी को एक नवीन रूप प्रदान किया । आज नारी ने यह प्रमाणित कर दिया है कि वह पुरुषों से किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। वह पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। आज की नारी से कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है। वह अध्यापिका, लेखिका, डॉक्टर, वकील, राजदूत, राज्यपाल, राष्ट्रपति का पद तो प्राप्त कर ही रही है, साथ ही प्रत्येक क्षेत्र में अपने देश, समाज व परिवार का प्रतिनिधित्व भी कर रही है। उसे अपनी एक पहचान मिल गई है और वह आत्मविश्वास से भरी हुई है। कहा जाता है कि एक

लड़का पढ़ता है, तो केवल एक व्यक्ति शिक्षित होता है, परंतु एक लड़की शिक्षित होती है, तो पूरी पीढ़ी, पूरा समाज पढ़ता है। भारतीय नारी ने शिक्षित होकर न केवल अपने परिवार के स्तर को ऊँचा उठाया है, बल्कि समाज को भी एक नई पहचान प्रदान की है। इतना सब होने के बावजुद भी भारतीय नारी ने अपनी मर्यादाओं और जिम्मेदारियों को पहचाना है। वह माता, बहन, पत्नी और एक पुत्री के सभी कर्तव्यों का पालन कर रही है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. डॉ. रत्नाकर पांडे,हिन्दी साहित्य सामाजिक चेतना,पृष्ठ 160.
2. रवीन्द्र कालिया, 17 रानडे रोड, पृष्ठ 78.
3. रवीन्द्र कालिया, खुदा सही सलामत है पृष्ठ 261
4. रवीन्द्र कालिया, खुदा सही सलामत है पृष्ठ 73.
5. कालिया, ममता, "बेघर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
6. कालिया, ममता, "लड़कियाँ, चित्रलेखा, 1987
7. आशारानी, "भारतीय नारी दशा और दिशा, पृ,सं, 18
8. कालिया, ममता, "एक पत्नि के नोट्स, 1997
9. धर्मपाल,"नारी एक विवेचन, भावना प्रकाशन,1996,पृ.सं 5
10. ममता कालिया, ममता, "दौड़, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
11. ममता कालिया- दुखम सुखम, पृष्ठ -16